भगवानोवाच्:- यह तो बच्चों को समझाया गया है कि मनुष्य को वा किसी देवता को भगवान नही कहा जाता। यहाँ जब बैठे हो तो बुधी में यह रखना है कि हम संगम युगी ब्राह्मण है। यह भी याद कोई सदेव कोई की रहती नही है। अपने को सचमुच ब्राह्मण समझते है ऐसा भी नही है। ब्राह्मणबच्चों को फिर दैवी गुण भी धारण करने है। हम संगम युगी ब्राह्मण है। हम शिव बाबा दवारा पुरुषोतम बन रहे है। यह यादगिरी भी सबको नही रहती है। बार-2 यह भूल जाते है कि हम पुरुषोतम युगी ब्राह्मण है। अभी ब्राह्मण तुम बन रहे हो। हमेशा नम्बरवार तो है ते ही है। सब अपनी-2 बुधी अनुसार पुरुषार्थ करते है। अभी संगम युगी हो। पुरुषोतम बनने वाले हो। जानते हो हम पुरुषोतम तब बनेंगे जब अपने अब को मानी मोस्ट बिलवेड बाप को याद करेंगे। याद से ही पाप विनाश होंगे। अगर कोई पाप करते है तो उसका सौगुणा हिसाव चढ़ जाता है। आगे जो पाप करते थे उनका 10% चढ़ता है। अब तो 100% चढ़ता है। क्यों कि ईश्वरिय गोद में आकर फिर पापकरते है। तुम जानते हो बाप हमको पढ़ाते है। सो देवता बनने। यह याद जिसको रहती है वो अलौकिक सर्विस भी करते रहेंगे। सदेव हर्षित मुखी बनने लिये औरों को भी रस्ता बताना है। भल कहीं भी जाते हो बुधि में यह तो याद रहे कि हम संगम युगी ब्राह्मण है। यह है पुरुषोतम युग। वो पुरुषोतम मास वा वर्ष कहते है। तुम कहते हो हम है पुरुषोतम संगम युगी ब्राह्मण। यह अच्छी रीती बुधी में धारण करना है। हम पुरुषोतम युगी ब्राह्मण बनने वाले है। अभी हम पुरुषोतम बनने की यात्रा पर है। यह भी याद रहे तो भी मनमनाभव ही हो गया। तुम बच्चे जानते हो हम पुरुषोतम बन रहे है पुरुषार्थ अनुसार और अपने कर्मों अनुसार। दैवी गुण भी चाहिये। और श्रीमत पर भी चलना पड़े। अपनी मत पर तो सभी मनुष्य चलते है। वो है ही रावण मत। ऐसे भी नही कि तुम कोई श्रीमत पर ही चलते हो। बहुत ही है जो रावण मत पर भी चलते है। श्रीमत पर कोई कितना % चलते कोई कितना% चलते है। कोई तो 2% भी चलते होंगे। भल यहाँ भी बैठे हो तो भी बुध तो पूरा नही बैठते हो। कहीं ना कहीं बुधी योग भटकता होगा। यहाँ एक ही अनोखा बच्चा है जो कि चार्ट लिखता है। इनको अपनी उन्नित का ख्याल है। रोज लिखता है कि आज कोई पाप का काम तो नही किया है। किसको दुःख तो नही दिया है। अपने ऊपर बहुत सम्भाल करनी होती है। क्योंकि धर्मराज भी सामने खड़ा है ना। अभी ही समय है हिसाब किताब चुक्तु करने का। सजायें भी खानी पड़े। बच्चे जानते है हम जन्म जन्मान्तर के पापी है। कहीं भी कोई मन्दिर में अथवा कोई भी गुरु पास अथवा कोई भी इष्ट देवता पास जाते है तो कहते है मैं तो जन्म जन्मान्तर की दोहागिन हूँ, पापिन हूँ। मेरी रक्षा करो। रहम करो। कोई सच बोलते है कोई तो झूठ भी बोलते है। यहाँ भी ऐसे ही है। बाबा हमेशा कहते है अपनी जीवन कहानी बाबा को लिख कर दो। कोई तो बिलकुल सच लिखते है। कोई तो छुपाते भी है। लज्जा आती है। यह तो जानते हो बुरा काम करने पर उसका फल भी बुरा मिलेगा। वो तो है अल्प काल की बात, यह तो बहुत कालों की बात है ना। बुरा काम करेंगे तो सजायें भी खावेंगे स्वर्ग में भी बहुत पिछाडी में आवेंगे। अभी सारा मालूम पड़ जाता है कौन-2 पुरुषोतम बन रहे है। वो है ही पुरुषोतम दैवी राज्य। उत्तम ते उत्तम पुरुषोतम बनते है ना। और किसी जगह ऐसे कोई की महिमा नही करेंगे। मनुष्य तो देवताओं के गुण भी नही जानते। भल महिमा गाते है परन्तु तोते की तरह। इसलिये बाबा भी कहते है भक्तों को पकड़ो। कहते है मैं नीच पापी कपटी है। बोलो क्या तुम जब शान्ति धाम में थे तो क्या तुम वहाँ नीच पापी कपटी थे? वहाँ पर तो आत्मायें सब पवित्र रहती है। यहाँ पर अपवित्र बनी है क्यों कि तमोप्रधान दुनियाँ है। नई दुनियाँ में तो पवित्र ही रहते है। पुरानी दुनियाँ में अपवित्र बन जाते है। अपवित्र बनाने वाला है रावण। इस समय भारत खास और आम सारी दुनियाँ पर इस समय रावण का राज्य है। अंग्रेजी में शैतानी राज्य कहा जाता है। यथा राजा रानी तथा

57

तथा प्रजा। हाइस्ट टू लोएस्ट। सब पतित है। पवित्र आत्मायें कहाँ से आ नहीं सकती। मल मनुष्य समझते हैं कि साधु सन्त आदपवित्र है। परन्तु शिव बाबा कहते है कि यह तो पहले-2 परमात्मा से बेमुख कीते है। अपने को तथा सारे भारत को जो भी इनकी शरण लेते है। उनको पाताल में भेज देते है। बाबा कहते है मैं तुमको पावन बना कर जाता हूँ फिर पतित कौन बनाते है? रावण। अब फिर तुम हमारी मत से पावन बन रहे हो। जानते है कि फिर आधा कल्प बाद हम रावण की मत पर पतित बनेंगे। अर्थात देह-अभिमान में आकर विकारों के वशीभूत हो जावेंगे। उसको आसुरी रावण मत कहा जाता है। मनुष्यों की है आसुरी रावण की मत। तुम अभी रावण आद को बिल्कुल नही मानते हो। वो तो दिन प्रति दिन पतित ही बनते जाते है। भारत ही पावन था सो ही पतित है। फिर पावन बनना है। यह चक्र जरूर फिरना है। पावन बनाने लिये पतित पावन बाप को आना पड़ता है। सृष्टी को चक्र जरूर लगाना ही है। यह फिरता रहता है। बाबा समझाते है इस समय देखो कितने ढेर मनुष्य है। कल कितने मनुष्य होंगे। लड़ाई लगेगी मौत तो सामने ही खड़ा है। कल फिर इतने सब कहाँ जावेंगे। सबके शरीर और यह पुरानी दुनियाँ विनाश होती है। यह राज अभी तुम्हारी ही बुधी में है। परन्तु बुधी मनुष्यों को यह भी पता नही है। वह जैसे कि एकदम आसुरी अनाड़ी है। वैसे ही यहाँ भी अनाड़ी है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। हम किसके सामने बैठे है वो भी समझते नही है। कम से कम पद पाने वाले ड्रामा अनुसार क्या कर सकते है। तकदीर में नही है। अभी तो बच्चो को सर्विस करनी है। बाप को याद करना है। यह तो समझो आज हम संगम युगी ब्राह्मण है। कल फिर क्या बनेंगे? पास्ट में हम शैतान रावण धर्म के थे। अभी ईश्वरीय धर्म के है। जैसे बाप ज्ञान का सागर सुख का सागर है वैसा ही बनना है। बनाने वाला बाप मिला है ना। देवताओं की महिमा गाते है सर्वगुण सम्पन्न 16... अभी तो इन गुणों वाला कोई है नही। अपने से सदैव पूछते रहो हम ऊँच पद पाने के कहाँ तक लायक बने है। संगम को अच्छी रीती याद करो हम संगम युगी ब्राह्मण पुरुषोत्तम बनने वाले है। श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम है ना नई दुनियाँ का। हम भी अब शिव बाबा से विश्व के मालिक बनते है। बच्चे जानते है हम शिव बाबा के सम्मुख बैठे है। तो और ही जास्ती पढ़ना चाहिये। पढ़ना भी है पढ़ाना भी है तो सिद्ध होता है कि पढ़ते नही है। बुधी में बैठता नही है। 5% भी नही बैठता। यह भी याद नही रहता कि हम संगम युगी ब्राह्मण है। बुधी में बाप को याद करना है और चक्र फिराना है। समझानी तो बहुत सहज है। अपने को आत्मा समझ कर और परमात्मा बाप को याद करना है। वो है सबसे बड़ा बाप। कहते है मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जावे। तुम पूज्य पुरुषोत्तम थे फिर कनिष्ट सो पुजारी बने हो। यह किसको पता नही कि हम ही पूज्य सो पुजारी बनते है। हम सो पूज्य हम सो पुजारी मन्त्र है बहुत अच्छा। उनहोंने फिर आत्मा सो परमात्मा कह दिया है। जो कुछ भी बोलते है एकदम रांग। इसको कहा भी जाता है अरिलीजस, अनराईटिअस, अन ला फुल। इम्प्योअर। हम ही यह थे। फिर 84 का चक्र लगा कर अभी ऐसे बने है। फिर हम जाते है घर वापस। हम आज यहाँ पर है कल फिर घर जावेंगे। हम बेहद के घर में जाते है। यह बेहद का नाटक है जो अभी रिपीट होता है। अभी हमको बाप और घर, मुक्तिधाम को याद करना है। देह सहित देह के सभी धर्म भूल अपने को आत्मा समझो। अभी हम इस शरीर को छोड़ कर अपने घर जाते है। यह पक्का याद कर लो बुधी में। हम आत्मा है यह भी याद रहे और अपने घर भी याद रहे। बुधी से सारी दुनियाँ का सन्यास होगा। शरीर का भी सन्यास तो सबका सन्यास। वो हठ योगी कोई सारे सृष्टी का थोड़ेई करते है। उनका अधूरा सन्यास है। तुमको तो सारी दुनियाँ का त्याग करना है। अपने को देह समझते है तो गधे उल्लु पाजी बन जाते है। फिर काम भी वैसे ही करते है। देह-अभिमानी बनने से चोरी चकरी झूठ पाप कदम-2 पर करते रहते है। दिन में 25, 30 पाप करते है। झूठ बोलना

भी तो पाप है नां। आदत पड़ जाती है। आवाज से बोलने की भी आदत पड़ जाती है। फिर कहते हैं हमारा आवाज ही ऐसा है। अरे तो वो कम करना सीखो नां। आवाज कम करने में कोई देरी नही लगती है। कुत्ते को पालते हैं तो अच्छा हो जाता है। कदर कितने छित्ते होते है मगर कोई साथ हिल जाते है तो डांस आद करते रहते है। जनावर भी सुधर जाते है। जनावरो को सुधारने वाले है मनुष्य। मनुष्यों को सुधारने वाला भगवान है। बाप कहते है तुम भी जनावर मिसल हो। तो मुझे भी कच्छ अवतार मच्छअवतार में कह देते हो। जैसी तुम्हारी ऐक्टिविटी है उससे भी बदतर मुझे कर दिया है। कितने नानसेंस हो। यह भी तुम जानते हो दुनियां नही जानती है। पिछाडी में तुमको सब सा० होगा कैसे-2 सजायें खावेंगें। वो भी तुमको मालूम पड़ जावेगा। आधा कल्प भक्ति की है। अब बाप मिला है। बाप कहते है मेरी मत परनही चलेंगें तो सजायें और ही बढ़ती जावेगी। इसलिये अब पाप आद छोडो। अपना चार्ट रखो। फिर साथ-2 धारना भी चाहिये किसको समझाने की प्रैक्टिस भी चाहिये। प्रदर्शनी के चित्रों पर खयालात बैठ कर चलाओ कि कोई को हम कैसे समझावे। पहले-2 बात ही यह उठाओ की गीता का भगवान कौन जबकि ज्ञान का सागर पतित पावन तो परमात्मा है नां। यह बाप है सभी आत्माओं का। बाप का तो परिचय चाहिये नां। ऋषी मुनी आद कोई को भी नां बाप का ही परिचय है। नां ही रचना की आद मध्य अन्त का ही परिचय है। इसलिये पहले-2 तो यही उनको समझा सिखा लो। भगवान एक है दूसरा कोई हो ही नहीसकता। जो अपने को शिवोअहम् अथवाआत्मा सो परमात्मा। परमात्मा सो आत्मा कहते हैंवोहै महान पतित। असुर। आसुरी राज्य तो है नां। सबसे जास्ती शैतान कौन है? जो जो अपने को ईश्वर कहलाते है। बाप बार-2 समझाते है कि यहां जब आकर बैठते हो तो बाप की याद में रहो। बाप भगवान हमको पढ़ाते है। हम स्टुडन्ट है। वो बाप भी है, टीचर भी है, सतगुरु भी है। एक की याद करेंगे तो टीचर और गुरु दोनो की याद आ जावेगी। बुधी भटकनी नही चाहिये। सिर्फ शिव-शिव भी नही कहना है। शिव हमारा बाप भी है सुप्रीम टीचर भी है हमको साथ भी ले जावेगा। उस एक की ही कितनी महिमा है। उनको ही याद करना है। कोई कहते है इसने तो ब्र, कं, को जगतगुरु बनाया है। तुम भी गुरु तो करते हो नां। फिर भी तुमको बाप नही कहेंगे टीचर गुरु कहेंगे। बाप नही। तीनो ही फिर उस एक बाप को ही कहा जाता है। वो सबसे बडा बाप है।
****
***** %%%
यह अच्छी रीति समझाना है। प्रदर्शनी में समझाने की भी अक्ल चाहिये। ढंग है परन्तु बोलते नही है। तो भी समझेंगे कि खिवर नही है। अपने में हिम्मत नही समझते। बाप-दादा दोनो कम्बाइन्ड है। बडी-2 प्रदर्शनई प्रदर्शनी होती है जैसे जयपुर है। जयपुर का कनेक्शन बहुत है तो जो अच्छे-2 बच्चे हैं उनको जाकर मुंह दिखा कर आना चाहिये। जैसे कुमारका है रमेश है। ऐसा कोई जरूरी काम है नही जो जा नही सकते। जैसे गंगा है अच्छा समझा सकती है। कुछ फेरन्गेर करनी है क्या करना है तो अपना विचार सागर मथन कर बाबा को बतावेंगे। अनुभव भी पाना है। हमने क्या-2 कमी देखी? गाईड्स पूरे नही देखे। सर्विसबुल बच्चों में फिर देह-अभिमान भी आ जाता है। आपस में लूण पानी हो जाते है। अन्दर आवेगा इनके सामने जावेंगे फिर कुछ हो नही जावे। इससे तो नां जावे तो अच्छा है। इसको ही कहा जाता है देहअभिमान। इसमें बडी बीयर बुधी चाहिये। जावेंगे तो बाबा को पूरा समाचार देवेंगे कि अभी यह-2 बनाना है। ऐसा-2 चित्र होना चाहिये। बाबा बच्चों की राय को मानते तो है नां। चित्र भी तो बच्चे ही बनाते है नां। यह सीढी भी तो बच्चे ने ही बनाई है। फिर विचार सागर मंथन हुआ वां कहीं देखा कि हम भी ऐसी बनावे। ड्रामा अनुसार ऐसी निकलनी थी। राय निकली फिर उसको इम्प्रूवमेन्ट में लाते गये। बाबामना थोडेई करते है। आगे चल कर साधु सन्त आद को भी तुम बाण मारते रहेंगें। जावेंगे कहां। एक ही हटी है। सदगति सबकी इसी हटी से होगी। यह हटी ऐसी है जहां तुम सभी को प्योअर होने का रस्ता बताते हो। फिर बने वां नां बने वो है उन पर। अच्छा मीठे-2 बच्चे से विदाई ओम